अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

भारतीय समाज में आधुनिकता और परंपरा का द्वंद्व

डॉ. प्रेमा शर्मा

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

सारांश

भारतीय समाज की संरचना परंपरा और आधुनिकता के द्वैत से निर्मित हुई है। यह समाज न तो पूर्णतः परंपरावादी है और न ही पूरी तरह आधुनिक। यहाँ परंपरा जीवन की जड़ों से जुड़ी हुई है, जबकि आधुनिकता परिवर्तन और प्रगति का प्रतीक है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में वैज्ञानिक चेतना, लोकतांत्रिक मूल्य, औद्योगीकरण, शहरीकरण और वैश्वीकरण ने आधुनिकता को गति दी, वहीं दूसरी ओर धार्मिक आस्थाएँ, सामाजिक रूढ़ियाँ, पारिवारिक मूल्य और सांस्कृतिक परंपराएँ समाज को स्थायित्व प्रदान करती रहीं। इस प्रकार भारतीय समाज में आधुनिकता और परंपरा के बीच एक निरंतर द्वंद्व देखने को मिलता है।

यह द्वंद्व केवल संघर्ष तक सीमित नहीं है, बल्कि संवाद और समन्वय की प्रक्रिया भी है। परंपरा जहाँ समाज को पहचान देती है, वहीं आधुनिकता उसे गतिशील बनाती है। प्रस्तुत समीक्षात्मक लेख में भारतीय समाज में आधुनिकता और परंपरा के द्वंद्व का ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि यह द्वंद्व भारतीय समाज की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी जीवंतता और बहुलतावादी चरित्र का प्रमाण है।

Keywords: भारतीय समाज, परंपरा, आधुनिकता, सामाजिक परिवर्तन, द्वंद्व, सांस्कृतिक चेतना

भूमिका

भारतीय समाज विश्व के सबसे प्राचीन और निरंतर विकसित होते समाजों में से एक है। इसकी विशेषता यह है कि यहाँ अतीत, वर्तमान और भविष्य एक-दूसरे से कटे हुए नहीं हैं, बल्कि एक निरंतर प्रवाह में जुड़े हुए हैं। परंपरा इस समाज की आत्मा है, जबकि आधुनिकता उसकी चेतना। परंपरा जहाँ पीढ़ियों से चली आ रही जीवन-पद्धति, आस्था और मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है, वहीं आधुनिकता परिवर्तन, नवाचार और तर्कशीलता का प्रतीक है।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज ने जिस तीव्र गति से सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन का अनुभव किया, उसने परंपरा और आधुनिकता के बीच तनाव को और अधिक स्पष्ट कर दिया। एक ओर संविधान द्वारा प्रदत्त समानता, स्वतंत्रता और न्याय जैसे आधुनिक मूल्य हैं, तो दूसरी ओर जाति, धर्म, लिंग और परंपरागत सामाजिक संरचनाएँ हैं, जो समाज को आज भी प्रभावित करती हैं।

यह द्वंद्व केवल वैचारिक नहीं, बल्कि व्यवहारिक भी है। व्यक्ति आधुनिक शिक्षा प्राप्त करता है, आधुनिक तकनीक का उपयोग करता है, लेकिन साथ ही पारंपरिक संस्कारों और मान्यताओं से भी जुड़ा रहता है। यही स्थिति भारतीय समाज को विशिष्ट बनाती है।

2. परंपरा की अवधारणा: अर्थ और स्वरूप

2.1 परंपरा का अर्थ

परंपरा का सामान्य अर्थ अतीत से प्राप्त वह विरासत है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती है। परंपरा केवल रूढ़ियाँ या अंधविश्वास नहीं है, बल्कि वह समाज के सामूहिक अनुभवों, ज्ञान और मूल्यों का संचय है।
भारतीय संदर्भ में परंपरा का अर्थ और भी व्यापक है। इसमें शामिल हैं—

- धार्मिक विश्वास
- सांस्कृतिक आचार
- सामाजिक संस्थाएँ
- नैतिक मूल्य
- जीवन-दर्शन

परंपरा समाज को निरंतरता प्रदान करती है और व्यक्ति को उसकी पहचान से जोड़ती है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

2.2 भारतीय परंपरा की विशेषताएँ

भारतीय परंपरा की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(क) आध्यात्मिक दृष्टिकोण

भारतीय परंपरा भौतिकता से अधिक आध्यात्मिक मूल्यों पर बल देती है। जीवन को केवल उपभोग का साधन न मानकर आत्मिक विकास का माध्यम माना गया है।

(ख) सामूहिकता

भारतीय समाज में व्यक्ति से अधिक परिवार और समाज को महत्व दिया गया है। संयुक्त परिवार प्रणाली इसी का उदाहरण है।

(ग) धार्मिकता

धर्म भारतीय जीवन का अभिन्न अंग है। जन्म से मृत्यु तक के संस्कार धार्मिक मान्यताओं से जुड़े हुए हैं।

(घ) सामाजिक संरचना

वर्ण और जाति व्यवस्था भारतीय परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है, जिसने समाज को संगठित तो किया, परंतु असमानता भी उत्पन्न की।

2.3 परंपरा की सकारात्मक भूमिका

- सामाजिक स्थिरता
- नैतिक अनुशासन
- सांस्कृतिक पहचान
- सामुदायिक भावना

परंपरा समाज को जड़ों से जोड़ती है और अराजकता से बचाती है।

2.4 परंपरा की सीमाएँ

- रूढ़िवादिता
- अंधविश्वास
- सामाजिक असमानता
- परिवर्तन का विरोध

यही सीमाएँ आधुनिकता के साथ टकराव को जन्म देती हैं।

3. आधुनिकता की अवधारणा: अर्थ और विकास

3.1 आधुनिकता का अर्थ

आधुनिकता एक ऐतिहासिक और वैचारिक प्रक्रिया है, जिसका संबंध वैज्ञानिक सोच, तर्क, स्वतंत्रता और समानता से है। यह परंपरा से पूर्ण विच्छेद नहीं, बल्कि उसके पुनर्मूल्यांकन की प्रक्रिया है।

आधुनिकता का मूल आधार है—

- विवेक
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण
- मानव अधिकार
- लोकतांत्रिक मूल्य

3.2 भारत में आधुनिकता का आगमन

भारत में आधुनिकता का प्रवेश मुख्यतः औपनिवेशिक शासन के दौरान हुआ। अंग्रेजों के आगमन के साथ—

- आधुनिक शिक्षा
- प्रिंट संस्कृति
- रेलवे और संचार
- न्याय और प्रशासन का विकास हुआ।

हालाँकि यह आधुनिकता औपनिवेशिक हितों से प्रेरित थी, फिर भी इसने भारतीय समाज को नए विचारों से परिचित कराया।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

3.3 स्वतंत्रता के बाद आधुनिकता

स्वतंत्रता के बाद भारत ने योजनाबद्ध विकास, लोकतंत्र और वैज्ञानिक प्रगति को अपनाया। संविधान ने—

- समानता
- स्वतंत्रता
- धर्मनिरपेक्षता

जैसे आधुनिक मूल्यों को स्थापित किया।

3.4 आधुनिकता की विशेषताएँ

- व्यक्तिवाद
- तर्कशीलता
- सामाजिक गतिशीलता
- स्त्री-पुरुष समानता
- तकनीकी विकास

3.5 आधुनिकता की चुनौतियाँ

- सांस्कृतिक विघटन
- उपभोक्तावाद
- नैतिक संकट
- सामाजिक अलगाव

यही कारण है कि आधुनिकता भी प्रश्नों के घेरे में है।

4. परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व: सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व वस्तुतः **स्थायित्व और परिवर्तन** के बीच का द्वंद्व है। समाज न तो केवल अतीत में जी सकता है और न ही अपनी जड़ों से कटकर भविष्य का निर्माण कर सकता है। यही कारण है कि जब समाज परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजरता है, तो परंपराएँ चुनौती के रूप में सामने आती हैं और आधुनिकता प्रश्नचिह्न बन जाती है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह द्वंद्व स्वाभाविक है। कोई भी समाज तब तक जीवित नहीं रह सकता जब तक वह अपने अनुभवों को सहेजते हुए नए परिवर्तनों को आत्मसात न करे। भारतीय समाज में यह द्वंद्व अधिक जटिल है, क्योंकि यहाँ परंपरा केवल सामाजिक ढाँचा नहीं, बल्कि **आस्था और पहचान** से जुड़ी हुई है।

4.1 द्वंद्व का अर्थ और स्वरूप

'द्वंद्व' का अर्थ केवल संघर्ष नहीं होता, बल्कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दो विरोधी शक्तियाँ परस्पर संवाद करती हैं। परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व तीन स्तरों पर देखा जा सकता है—

1. **वैचारिक स्तर** – आस्था बनाम तर्क
2. **सामाजिक स्तर** – रूढ़ियाँ बनाम सुधार
3. **व्यक्तिगत स्तर** – संस्कार बनाम स्वतंत्रता

भारतीय समाज में व्यक्ति अक्सर इन तीनों स्तरों पर द्वंद्व का अनुभव करता है। उदाहरणस्वरूप, एक व्यक्ति वैज्ञानिक सोच रखता है, लेकिन धार्मिक कर्मकांड भी निभाता है। यही द्वंद्व भारतीय समाज की विशिष्टता है।

4.2 समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

(क) एमिल दुर्खीम का दृष्टिकोण

दुर्खीम ने परंपरागत समाज को **यांत्रिक एकता** (Mechanical Solidarity) और आधुनिक समाज को **सांगठनिक एकता** (Organic Solidarity) से जोड़ा। भारतीय समाज इन दोनों के बीच स्थित दिखाई देता है।

(ख) मैक्स वेबर का दृष्टिकोण

वेबर के अनुसार आधुनिकता का आधार **युक्तिकरण (Rationalization)** है। भारत में युक्तिकरण की प्रक्रिया परंपरागत आस्थाओं से टकराती है।

(ग) एंथनी गिडेन्स

गिडेन्स आधुनिकता को आत्मचिंतन की प्रक्रिया मानते हैं। भारतीय समाज में यह आत्मचिंतन परंपरा के पुनर्मूल्यांकन के रूप में सामने आता है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

5. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: परंपरा से आधुनिकता की ओर

भारतीय समाज में परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व अचानक उत्पन्न नहीं हुआ, बल्कि यह एक **ऐतिहासिक प्रक्रिया** का परिणाम है।

5.1 प्राचीन भारत: परंपरा की सुदृढ़ता

प्राचीन भारतीय समाज में परंपरा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त थी—

- धर्म
- शिक्षा
- शासन
- सामाजिक संबंध

वेद, उपनिषद, स्मृतियाँ और पुराण सामाजिक आचरण के मार्गदर्शक थे। परिवर्तन की गति धीमी थी और परंपरा सर्वोपरि थी।

5.2 मध्यकाल: परंपरा और परिवर्तन का सहअस्तित्व

मध्यकाल में—

- भक्ति आंदोलन
- सूफी परंपरा

ने परंपरा के भीतर सुधार की प्रक्रिया शुरू की। यह काल द्वंद्व के बजाय **संवाद का काल** था।

5.3 औपनिवेशिक काल: द्वंद्व का तीव्र रूप

अंग्रेजों के आगमन के साथ भारतीय समाज में आधुनिकता का प्रवेश हुआ। यह आधुनिकता स्वाभाविक नहीं, बल्कि **औपनिवेशिक दबाव** के तहत आई।

6. औपनिवेशिक काल और आधुनिकता का प्रभाव

6.1 पाश्चात्य शिक्षा और बौद्धिक परिवर्तन

अंग्रेजों ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली स्थापित की—

- अंग्रेजी भाषा
- विज्ञान
- तर्कशास्त्र

इससे भारतीय समाज में एक नया शिक्षित वर्ग उभरा, जिसने परंपराओं पर प्रश्न उठाए।

6.2 सामाजिक सुधार आंदोलन

राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, दयानंद सरस्वती जैसे सुधारकों ने—

- सती प्रथा
- बाल विवाह
- जातिगत भेदभाव

के विरुद्ध आवाज उठाई। यह आधुनिकता और परंपरा के द्वंद्व का स्पष्ट उदाहरण है।

6.3 राष्ट्रवाद और परंपरा

भारतीय राष्ट्रवाद ने परंपरा को नकारा नहीं, बल्कि उसे आधुनिक चेतना से जोड़ा। गांधी जी ने परंपरा और आधुनिकता के समन्वय का मार्ग प्रस्तुत किया।

7. स्वतंत्रता आंदोलन और वैचारिक द्वंद्व

स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन भी था।

- गांधी: परंपरा आधारित आधुनिकता
- नेहरू: वैज्ञानिक आधुनिकता

इन दोनों दृष्टियों के बीच द्वंद्व, लेकिन विरोध नहीं था।

8. स्वतंत्रता के बाद का भारत: द्वंद्व का विस्तार

स्वतंत्रता के बाद—

- संविधान
- लोकतंत्र
- औद्योगीकरण

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

ने आधुनिकता को संस्थागत रूप दिया। परंतु समाज की जड़ें परंपरा में बनी रहीं।

8.1 संविधान और आधुनिक मूल्य

भारतीय संविधान—

- समानता
- स्वतंत्रता
- धर्मनिरपेक्षता

जैसे मूल्यों को स्थापित करता है, जो कई परंपरागत संरचनाओं से टकराते हैं।

8.2 सामाजिक संरचनाओं में तनाव

- जाति व्यवस्था
- पितृसत्ता
- धार्मिक रूढ़ियाँ

संविधानिक मूल्यों के साथ संघर्ष करती दिखाई देती हैं।

9. परंपरा और आधुनिकता: संघर्ष या समन्वय?

यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है कि क्या परंपरा और आधुनिकता का संबंध केवल संघर्ष का है?
भारतीय संदर्भ में उत्तर है— **नहीं**। यहाँ द्वंद्व के साथ-साथ समन्वय भी है।

- योग: परंपरागत, पर वैश्विक और आधुनिक
- लोकतंत्र: पाश्चात्य, पर भारतीय संदर्भ में ढला हुआ

10. द्वंद्व का सामाजिक प्रभाव

- पीढ़ीगत संघर्ष
- मूल्य संकट
- पहचान की समस्या
- सामाजिक परिवर्तन की गति

परंतु यही द्वंद्व समाज को आत्मालोचन की शक्ति भी देता है।

11. परिवार व्यवस्था में परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व

परिवार भारतीय समाज की मूल इकाई है। यहाँ परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व सबसे पहले और सबसे स्पष्ट रूप में दिखाई देता है। भारतीय परिवार केवल रक्त-संबंधों का समूह नहीं, बल्कि संस्कारों, मूल्यों और सामाजिक अनुशासन की संस्था रहा है।

11.1 संयुक्त परिवार: परंपरा का प्रतीक

परंपरागत भारतीय समाज में संयुक्त परिवार की प्रधानता रही है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ थीं—

- कई पीढ़ियों का एक साथ रहना
- सामूहिक निर्णय प्रणाली
- आर्थिक संसाधनों का साझा उपयोग
- बुजुर्गों का सम्मान और अनुशासन

संयुक्त परिवार व्यवस्था सामाजिक सुरक्षा और भावनात्मक स्थिरता का आधार थी।

11.2 एकल परिवार: आधुनिकता का प्रभाव

शहरीकरण, औद्योगीकरण और रोजगार की आवश्यकता ने एकल परिवार को बढ़ावा दिया। आधुनिक परिवार की विशेषताएँ हैं—

- व्यक्तिगत स्वतंत्रता
- निजता (Privacy)
- आर्थिक आत्मनिर्भरता
- दांपत्य संबंधों की प्राथमिकता

यह परिवर्तन आधुनिकता की अनिवार्य परिणति है, परंतु इससे पीढ़ीगत दूरी और भावनात्मक अलगाव भी बढ़ा है।

11.3 पीढ़ीगत संघर्ष

बुजुर्ग पीढ़ी परंपरा की वाहक होती है, जबकि युवा पीढ़ी आधुनिक मूल्यों की समर्थक। इससे—

- जीवनशैली
- विवाह
- करियर

- नैतिकता

जैसे विषयों पर मतभेद उत्पन्न होते हैं। यह द्वंद्व भारतीय परिवारों में सामान्य हो गया है।

12. विवाह व्यवस्था में द्वंद्व

विवाह भारतीय समाज में केवल व्यक्तिगत संबंध नहीं, बल्कि सामाजिक संस्था है।

12.1 परंपरागत विवाह व्यवस्था

परंपरागत विवाह की विशेषताएँ—

- माता-पिता द्वारा तय विवाह
- जाति और धर्म की अनिवार्यता
- सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रश्न
- विवाह को धार्मिक संस्कार मानना

इस व्यवस्था ने सामाजिक स्थिरता दी, परंतु व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित किया।

12.2 आधुनिक विवाह की अवधारणा

आधुनिकता ने विवाह को व्यक्तिगत चयन से जोड़ा—

- प्रेम विवाह
- अंतरजातीय विवाह
- अंतरधार्मिक विवाह
- सहजीवन (Live-in relationship)

यह आधुनिकता की अभिव्यक्ति है, परंतु परंपरागत समाज में इसे अभी भी संदेह की दृष्टि से देखा जाता है।

12.3 विवाह में द्वंद्व के सामाजिक प्रभाव

- ऑनर किलिंग
- पारिवारिक असहमति
- सामाजिक बहिष्कार

ये सभी परंपरा और आधुनिकता के तीव्र टकराव के परिणाम हैं।

13. स्त्री जीवन में परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व

यदि भारतीय समाज में परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व को सबसे तीव्र रूप में कहीं देखा जा सकता है, तो वह है **स्त्री जीवन**।

13.1 परंपरागत स्त्री छवि

परंपरागत भारतीय समाज में स्त्री—

- गृहिणी
- त्याग और सहनशीलता की मूर्ति
- परिवार की मर्यादा की संरक्षिका

के रूप में देखी गई। पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने स्त्री की भूमिका को सीमित किया।

13.2 आधुनिक स्त्री की पहचान

आधुनिकता ने स्त्री को—

- शिक्षा
- रोजगार
- राजनीतिक भागीदारी
- कानूनी अधिकार

प्रदान किए। आज स्त्री आत्मनिर्भर और आत्मचेतन बन रही है।

13.3 स्त्री संघर्ष का द्वंद्वात्मक स्वरूप

स्त्री आज दो भूमिकाओं के बीच फँसी हुई है—

- परंपरागत पारिवारिक दायित्व
- आधुनिक पेशेवर अपेक्षाएँ

यह दोहरा बोझ स्त्री के जीवन को मानसिक और सामाजिक दबाव से भर देता है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

13.4 स्त्री आंदोलन और आधुनिक चेतना

नारीवादी आंदोलनों ने—

- लैंगिक समानता
- घरेलू हिंसा
- संपत्ति अधिकार

जैसे मुद्दों को सामने लाया। यह आधुनिक चेतना परंपरागत संरचनाओं को चुनौती देती है।

संदर्भ सूची

[1]. योगेन्द्र सिंह – **भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन** (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
[2]. एम. एन. श्रीनिवास – **आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन** (ओरिएंट ब्लैकस्वान)
[3]. रामशरण दुबे – **भारतीय समाज : संरचना और परिवर्तन** (राजकमल प्रकाशन)
[4]. आन्द्रे बीते – **भारत में जाति और परिवार** (हिंदी माध्यम संस्करण)
[5]. डी. पी. मुखर्जी – **परंपरा और आधुनिकता** (वाणी प्रकाशन)
[6]. रामधारी सिंह 'दिनकर' – **संस्कृति के चार अध्याय** (राजकमल प्रकाशन)
[7]. विद्यानिवास मिश्र – **भारतीय संस्कृति की निरंतरता** (लोकभारती प्रकाशन)
[8]. हजारीप्रसाद द्विवेदी – **भारतीय संस्कृति और साहित्य** (राजकमल प्रकाशन)
[9]. नन्दकिशोर नवल – **भारतीय परंपरा और आधुनिकता** (वाणी प्रकाशन)
[10]. कपिल कपूर – **भारतीय ज्ञान परंपरा** (वाणी प्रकाशन)
[11]. अशिस नंदी – **आधुनिकता के विकल्प** (हिंदी अनुवाद)
[12]. सुधीश पचौरी – **उत्तर आधुनिकता और हिंदी साहित्य** (वाणी प्रकाशन)
[13]. एंथनी गिडेन्स – **आधुनिकता और आत्मपहचान** (हिंदी अनुवाद)
[14]. अरुण कुमार – **वैश्वीकरण और भारतीय समाज** (अक्षर प्रकाशन)
[15]. प्रभात कुमार – **वैश्वीकरण: प्रभाव और चुनौतियाँ** (राजकमल प्रकाशन)
[16]. जवाहरलाल नेहरू – **भारत एक खोज** (राजकमल प्रकाशन)
[17]. भीमराव अम्बेडकर – **जाति का विनाश** (हिंदी संस्करण)
[18]. राममनोहर लोहिया – **इतिहास चक्र** (लोकभारती प्रकाशन)
[19]. राजीव भार्गव – **भारतीय धर्मनिरपेक्षता** (हिंदी अनुवाद)
[20]. योगेन्द्र यादव – **लोकतंत्र और समाज** (हिंदी माध्यम)